डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र
सहायक प्राचार्य,
सी० एम० जे०कॉलेज
दोनवारी हाट खुटौना

भाषा विज्ञानक प्रयोजन आ महत्व

भाषा विज्ञान दू शब्दक मेलसँ बनल अछि - भाषा आ विज्ञान । भाषा मानवक परस्पर विचार- विनिमयक सर्वोत्तम साधन अछि । ध्वनि सभक। विशिष्ट संयोजन सार्थक भाषाक निर्माण करैत अछि आ फेर मानव ओकरे माध्यम सँ अपन भाव एवं विचार। सभहक। आदान - प्रदान तथा प्रकाशन करैत अछि ।

विज्ञानक अर्थ अछि शास्त्रीय ज्ञान आ अध्ययन। दोसर शब्दमे ओकरा ज्ञानक विशिष्ट एवं सम्यक अध्ययन कहल जा सकैत अछि । एतावता ज्ञात होइत अछि जे भाषाक वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करयवला विषय भाषा - विज्ञान भेल ।

कोनो शास्त्र एवं विज्ञानक अध्ययन ओकर उपयोगिता आदिकेँ दृष्टि मे राखि कए कएल जाइत अछि । एहि हेतु पतंजलि षडग्वेदक अध्ययनक उद्देश्य ज्ञानक प्राप्तिए बतौलनि अछि - " ब्रम्हणेन निष्कारण्य धर्मः षडंगो वेदोध्येयोगेश्च । " एतवय नहि व्याकरणक अध्ययनक प्रयोजन भाषा अज्ञान - सुलभ संदेह सभक निवारण होएबाक चाही - " असंदेहार्थ श्वाध्येयं व्याकरणम । "

उपर्युक्त दुनू उद्धरण सभसँ सिद्ध होइत अछि जे कोनो शास्त्र आ विज्ञानक अध्ययनक उद्देश्य ज्ञान प्राप्ति होइत अछि । भाषा विज्ञान सेहो शास्त्र आ विज्ञान दुनू अछि । अतएव भाषाविज्ञानक अनेक महत्त्व अथवा उपयोगिता अछि , यथा -

1. भाषाविज्ञान मे भाषा- विषयक अध्ययन कएल जाइत अछि अतएव एहि विज्ञानक प्रथम प्रयोजन अथवा महत्त्व भाषा - विषयक समस्या सभहक समाधान प्रस्तुत करब अछि । एहि अध्ययन सँ शब्द , वाक्य , आदिक आत्मकथा पढ़बाक हेतु भेटैत अछि आ एहि सँ हमरा सभहक मनोरंजन होइत अछि । निष्कर्षतः हम कहि सकैत छी जे बौद्धिक - ज्ञान - विज्ञानक तृप्तिक संग हार्दिक मनोरंजन प्रदान करब सेहो एहि विज्ञानक प्रयोजन अछि ।
2. भाषाविज्ञानक अध्ययन सँ साहित्यिक छात्रक प्रवृत्ति अनुसंधानात्मक भए जाइत अछि । एकर फलस्वरूप ओकर सूझ - बूझ गँहीर आ तुलनात्मक पद्धति केँ अपनाबयबला भए जाइत अछि ।
3. भाषाविज्ञान सँ अनेक समस्याक समाधान होइत अछि। प्राचीन कालमे शब्दक अर्थ किछु आरो छल आ आई किछु आरो अछि । ई कोना आ किएक भेल ? एकर पूर्णरूपेण समाधान भाषाविज्ञान सँ भए जाइत अछि ।
4. भाषाविज्ञान साहित्यक संग - संग व्याकरणक अनेक समस्याक समाधान सेहो प्रस्तुत करैत अछि । भाषाविज्ञानक अध्ययनक फलस्वरूप वेदक अध्ययन मे खूब सहायता भेटल अछि । एहि रूपसँ प्राचीन संस्कृति आ सभ्यताक बिभिन्न अध्यायक उद्दघाटन मे ई विज्ञान पर्याप्त। सहायता देलक अछि । भाषा सभ्यता एवं संस्कृतिक प्रतीक होइत अछि । व्याकरण ओकर परिमार्जन एवं परिष्कार करैत अछि । मुदा व्याकरण केँ दिशा निर्देशनक काज भाषाविज्ञान करैत अछि । भाषाविज्ञान जाहि शब्द सभकेँ स्वीकार कए लैत अछि ओहि शब्द केँ किछु समयक बाद व्याकरण सेहो स्वीकार कए लैत अछि । भाषाक जाहि समस्या सभक समाधान व्याकरण नहि कए पबैत अछि भाषाविज्ञान ओहि समस्या सभक समाधान मे व्याकरणक सहयोग करैत अछि ।
5. भाषाविज्ञान सँ प्रागेतिहासिक अनुसंधान केँ प्रेरणा भेटैत अछि । एतबय नहि एकर फलस्वरूप एकर सहयोग सँ हम मानव जातिक इतिहासक अध्ययन करैत छी । भाषाविज्ञान मे हम मानव जातिक बिभिन्न युगक सभ भाषाक ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक अध्ययन करैत छी । एहि अध्ययनक द्वारा ऐतिहासिक विशेषतः प्रागैतिहासिक संस्कृति आ सभ्यताक ज्ञान होइत अछि । हम सहज रूपसँ भाषाविज्ञानक द्वारा अज्ञान एवं अंधकारमय अतीतक गर्त मे प्रवेश कए मानवीय संस्कृति व सभ्यताक रहस्यक अनावरण कए दैत छी । एतबय नहि भाषाविज्ञान ओहि कालक इतिहास लिखबा मे सहायक होइत अछि , जाहि इतिहास स्वयं इतिहास केँ सेहो ज्ञात नहि रहैत अछि । भाषाविज्ञानक इएह वैशिष्ट्यक कारण आर्यक निवास स्थान आदिक खोजमे अभूतपूर्व योगदान भेटल अछि।
6. भाषाविज्ञान ध्वनि- विज्ञानक अध्ययन- अध्यापन मे सहयोग दैत अछि । केओ तोतराइत अछि वा हकलाइत अछि त एहि सँ ओकर अभिव्यंजना मे बाधा पड़ैत अछि , एकर कारण की अछि ? उच्चारण संबंधी गड़बड़ी कोना

दूर भए सकैत अछि ? एहि सभ प्रश्नक निराकरण भाषाविज्ञानक सहयोग सँ सुविधापूर्वक भए सकैत अछि । अतएव ई सिध्द भए गेल अछि जे भाषा विज्ञान वाकचिकित्साक परमावश्यक अंग बनि गेल अछि ।

7. भाषाविज्ञानक अध्ययन एके भाषा धरि सीमित नहि रहैत अछि , बल्कि विश्वक प्रत्येक जातिक भाषा - परिवारक पारिवारिक परिचय आ विचारक आदान- प्रदान विश्वबंधुत्वक भावनाक प्रचार आ प्रसार मे योगदान करैत अछि । विदेशक ध्वनि सभक शिक्षा ग्रहण करबा मे भाषाविज्ञानक अध्ययन सँ सहायता भेटैत अछि । ओकर उचित रूप तथा सहज ग्राह्य प्रणाली सँ हम अवगत भए जाइत छी ।

8. भाषाक अध्ययनक प्रसंगमे इतिहास , पुरातत्व , मनोविज्ञान , समाजशास्त्र , मानवशास्त्र आदिक अध्ययन सेहो होइत अछि । अतएव ई विज्ञान परस्पर एक दोसराकेँ प्रभावित करैत अछि । भाषाविज्ञानक सहयोगसँ एहि विषय सभक अध्ययन मे गंभीरता आ व्यापकता अबैत अछि ।

9. भाषाविज्ञानक द्वारा बिभिन्न विज्ञान सभक उत्पत्ति भेल अछि । भाषाविज्ञान सँ तुलनात्मक विज्ञान जाहि मे मानव जातिक बिभिन्न धार्मिक विश्वास सभहक तुलनात्मक अध्ययन कएल जाइत अछि आ पुराण विज्ञान जाहिमे पौराणिक गाथा सभपर विचार कएल जाइत अछि तथा जनकथा विज्ञान अथवा लोककथा विज्ञान अथवा लोकगाथा विज्ञान आदिक उद्भव एवं विकास मे सहयोग प्रदान कएल गेल अछि । मानवजाति विज्ञान जाहिमे भिन्न- भिन्न जातिक वंश परम्परा आदिपर विचार कएल जाइत अछि तकरा भाषाविज्ञान सँ प्रत्येक चरण मे सहायता भेटैत छैक ।

10. कोनो भाषाक लिपिक इतिहास , ओकर शुद्धता आ व्यापकता केँ सिद्ध करबामे भाषाविज्ञानक योगदान सराहनीय बुझल गेल अछि । एकर संग - भाषाविज्ञान भाषा , ध्वनि आ अर्थक परिवर्तनक कारणक खोज सहजता सँ करैत अछि ।

11. भाषाविज्ञान सँ संचारक साधनकेँ सेहो सहायता भेटैत अछि । दूर संचार वा यांत्रित अनुवादक हेतु संकेत सभहक निर्माण वा तत्सम्बन्धी सिद्धांत सभहक प्रणयन तखनहि संभव अछि , जखन एकर भाषिक संकेत सभसँ परिचय हो आ भाषिक संकेत सभहक पूर्ण परिचय भाषाविज्ञानक बिना कल्पनातीत अछि । अतएव दूरसंचार मे भाषाविज्ञान द्वारा बड़ मदति भेल अछि । उपर्युक्त विवरण सँ ज्ञात होइत अछि जे भाषाविज्ञानक महत्त्व असीम अछि । एकरा द्वारा भाषा आ वाणी विषयक सहज कौतूहल आ उत्सुकता केँ शांत कएल जाइत अछि । ओ भाषाक आत्म कथा एवं शब्दक रामकहानी अछि । भाषाविज्ञानक अध्ययनकर्त्ता केँ ओहि मे रमण कएला उत्तर ओहने आनंद प्राप्त होइत छैक जेहने आनंद काव्य - रसिक केँ काव्यास्वादन मे होइत छैक ।

वास्तव मे भाषा मानवक व्यवहारक साधिका अछि । अतएव जाबत धरि मानवता अछि ताबत धरि ओकर महत्त्व अछि । मानवताक इतिहास भूगोल सँ ई संम्बद्ध अछि । अतएव जाहिसँ मानवक सर्वांगीण विकास होइत अछि ओकर महत्त्व स्वयं सिद्ध अछि ।